Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 19, Issue No. 1, January-2022, ISSN 2230-7540

मांडलगढ़ में शाहपुरा शासको की जागीरों का ऐतिहासिक अध्ययन

Hari Lal Balai[1]*, Dr. Suman Rathore[2]

[1] Research Scholar, Mohanlal Sukhadiya University , Udaipur

[2] Supervisor , Mohanlal Sukhadiya University , Udaipur

सार - *मेवाड़ की पूर्वी सीमा पर स्थित मांडलगढ़ अपनी भौगोलिक एवं ऐतिहासिक विरासत के कारण मेवाड़ में विशिष्ट स्थान रखता है। 14वीं शताब्दी से लेकर 19वीं शताब्दी तक मांड़लगढ़ को लेकर मेवाड़ राज्य का मालवा के सुल्तानों, मुगलों व बून्दी के हाड़ा शासकों से संघर्ष हुआ है। मांड़लगढ़ मेवाड का सीमावर्ती परगना था। इसमें खालसा गाँवों की संख्या पट्टे में आवंटित गाँवों से अधिक रही है। क्योंकि यहाँ आये दिन बाहरी आक्रमण का सदा भय बना रहता था। इस कारण कोई भी जागीरदार अपने लिए इस क्षेत्र में कोई जागीर नहीं लेना चाहता था। मांडलगढ़ परगने की सीमा शाहपुरा राज्य से लगती थी। शाहपुरा के राजवंश का उदय मेवाड़ महाराणा के वंश से ही हुआ है। सुजानसिंह ने मुगलबादशाह शाहजहाँ से फूलियाँ का पट्टा प्राप्त किया था। बाद में इस जागीरको एक राज्य के रूप में विकसित करने का प्रयास किया गया। इस कार्य में उन्हें काफी सफलता मिली। बाद में उनके वंशज भारतसिंह ने मुगल बादशाह औरंगजेब को अपनी सेवा से प्रभावित करके राजा का खिताब प्राप्त किया था।*

मेवाड़ महाराणा द्वारा ईनाम स्वरूप शाहपुरा के राजाओं को मांड़लगढ़ में जागीरें प्रदान की गई थी। मांड़लगढ़ के गाँव जागीर में मिलने से शाहपुरा के राजाओं ने मेवाड़ दरबार में अपनी सेवा अर्पित की है। मेवाड़ महाराणा द्वारा उन्हीं गाँवों की जागीर प्रदान की है जो शाहपुरा राज्य की सीमा पर स्थित है। ताकि शान्ति व्यवस्था बनी रहे और मांडलगढ़ के अन्य जागीरदारों व शाहपुरा के राजाओं के मध्य कोई विवाद उत्पन्नन हीं हो। मेवाड़ व शाहपुरा राज्य के मध्य कई बार विवाद की स्थिति उत्पन्न होने पर महाराणा द्वारा उनकी मांडलगढ़ में स्थिति जागीर को जब्त भी किया गया है।

उम्मेदसिंह द्वारा मांडलगढ़ के अमरगढ़ के भौमियादलेल सिंह की हत्या व अमरगढ़ पर आक्रमण के बाद मेवाड़ महाराणा जगत सिंह द्वितीय ने उनकी पारोली की जागीर जब्त की है साथ ही फौज खर्च हेतु एक लाख का जुर्माना भी किया गया है। मांडलगढ़ की बड़लियास गाँव की जागीर तो हमेशा से ही शाहपुरा के राजवंश हिम्मत सिंह के वंशजों के पास रही हैं। महाराणा द्वारा समय-समय उनकी जागीर में अन्य गाँव भी सम्मिलित किये गये है। बड़लियास के जागीरदारों ने मेवाड़ दरबार में अपनी सैनिक सेवा प्रदान की है। महाराणा अरिसिंह द्वितीय ने तो उम्मेद सिंह होमेवाड़ की रक्षार्थ में उपस्थित होने के लिए काछोला की जागीर प्रदान कर दी थी साथ ही मांडलगढ़ का किला भी देने का वादा कर दिया था। एक समय में मांडलगढ़ परगने का लगभग आधा भू-भाग शाहपुरा के शासकों को जागीर में दे दिया गया था। आपसी कई विवादों के होते हुए भी मेवाड़ महाराणा व शाहपुरा के मध्य मधुर सम्बन्ध कायम रहे हैं। महाराणा द्वारा अन्य कई सरदारों को भी मांडलगढ़ में गाँव जागीर में दिये है। मांडलगढ़ में मराठों की लूटपाट के समय भी शाहपुरा के राजाओं ने वहाँ के अन्य जागीरदारों व ग्रामीणों की रक्षा की हैं क्योंकि मेवाड़ की सेना के मांडलगढ़ पहुँचने में समय लगता था जबकी शाहपुरा की सेना निकट होने के कारण उनकी सहायतार्थ शीघ्र पहुँच जाती थी।

मुख्य शब्द - *परगना, रेख, टका, पट्टा*

----------X----------

1. हिम्मत सिंह एवं मांडलगढ़

हिम्मत सिंह शाहपुरा के संस्थापक महाराज सुजान सिंह के ज्येष्ठ पुत्र फतेहसिंह के पुत्र थे। दिल्ली में मुगल बादशाह शाहजहाँ के अस्वस्थ होने पर सल्तनत में उनकी मृत्यु की

www.ignited.in

अफवाह फैल गई। जिससे शाहजादों में तख्त को लेकर उत्तराधिकार संघर्ष प्रारम्भ हो गया था। दक्षिण में औरंगजेब ने अवश्यम्भावी गृहयुद्ध की तैयारी कर ली थी। दाराशिकोह ने बादशाह से विचारविमर्श करके शाही सेना को दक्षिण में भेजने का निर्णय लिया। उन्होंने जोधपुर के महाराजा जसवंत सिंह को मालवा का सूबेदार नियुक्त किया और शाही सेना सहित दक्षिण में औरंगजेब को दिल्ली की तरफ बढ़ने से रोकने के लिए भेजा।[1] जसवंत सिंह के साथ शाहपुरा के महाराजाधिराज सुजानसिंह अपने पांच पुत्रों-ज्येष्ठपुत्र फतेहसिंह, हरिसिंह, राजसिंह, जगमालसिंह, अनोपसिंह एवं दो हजार सैनिकों सहित उज्जैन के लिए रवाना हुए। जनवरी, 1658 ई. में महाराजा जसवंत सिंह व फतेह सिंह शाही सेना सहित उज्जैन पहुँचे। औरंगजेब व मुराद की संयुक्त सेना उज्जैन तक आ पहुँची थी।[2] शाही सेना व औरंगजेब व मुराद की संयुक्त सेना के मध्य 15 अप्रैल 1658 ई. को धर्मत नामक स्थान पर युद्ध हुआ। अंत में विजय औरंगजेब के हाथ लगी। इस युद्ध में शाहपुरा के महाराजाधिराज सुजानसिंह अपने पाँच पुत्रों सहित वीरगति को प्राप्त हुए तथा कई अन्य राजपूत सरदार मारे गये।[3] अपने पिता की मृत्यु के समय हिम्मत सिंह पांचसाल के थे। अल्पआयु में ही उनको शाहपुरा के महाराधिराज नियुक्त किये गये। उस समय शाही नीति के अनुसार रियासत के राजा को शाही दरबार में अपनी सेना सहित उपस्थित होना होता था। इसी के अनुसार हिम्मत सिंह को भी मुगल दरबार में शाही सेवा के लिए फरमान भेजा गया। राजमाता ने अपने इकलौते पुत्र को मुगल दरबार में शाही सेवा के लिए भेजने से साफ इन्कार कर दिया। धर्मत के युद्ध में अपने पति सुजानसिंह की मृत्यु ने उन्हें विचलित कर दिया था इस कारण वह अपने अवयस्क पुत्र को शाही सेवा में भेजकर खोना नहीं चाहती थी। रियासत के सभी सरदारों ने राजमाता से महाराज को दिल्ली भेजने का आग्रह किया। अन्त में सभी सरदारों ने बैठक बुलाकर यह निर्णय लिया की महाराज के स्थान पर उनके चाचा दौलतसिंह को शाही सेवा में दिल्ली भेजा जाये। रियासत के सभी काम में महाराज का सलाहकार डूंगाजी चेचाणी को नियुक्त किया गया।[4] दौलतसिंह दिल्ली जाकर रायसिंह के साथ मुगल दरबार में उपस्थित हुए। वहराय सिंह के साथ तीन साल तक मुगल दरबार में अपनी हाजरी देते रहे। अन्त में बादशाह औरंगजेब ने उनकी शाही सेवा से प्रसन्न होकर राजधानी जाने की अनुमति प्रदान कर दी।

बादशाह औरंगजेब ने 1664 ई. में फिर से महाराजधिराज हिम्मतसिंह को शाही सेवा के लिए फरमान भेजा। रियासत के सलाहकार डूंगाजी चेचाणी ने राजमाता से निवेदन किया की महाराजाधिराज को दिल्ली भेजा जाये। परन्तु राजमाता ने अपने अवयस्क पुत्र को शाही सेवा में भेजने से मना कर दिया। सभी सरदारों से कहा की मेरे पुत्र को शाहपुरा का राज्य नहीं चाहिए। हमें तो कोई भी गाँव जागीर में दे दिया जाये। हम वहाँ पर अपना जीवन निर्वाह कर लेंगे। ऐसी विकट घड़ी में सभी सरदारों ने दौलतसिंह को शाहपुरा का महाराजधिराज नियुक्त कर शाही सेवा के लिए सैनिकों सहित दिल्ली भेजा। हिम्मत सिंह को ढीकोला की जागीर प्रदान की गई। 5वह अपने परिवार सहित जाकर निवास करने लेंगे। बाद में वह मेवाड़ महाराणा की सेवा में चले गये और वही पर दरबार में सेवा देने लगे। महाराणा उनकी सेवा से प्रसन्न होकर उन्हें मांडलगढ़ परगने में जागीर प्रदान की थी।

हिम्मत सिंह को मांडलगढ़ परगने में नौ गाँवों की जागीरी प्रदान की गई थी। इन गाँवों की रेख 22000 टका थी।[6] ये नौ गाँव निम्न थे-

- **बड़लियास-** बड़लियास मांडलगढ़ परगने में कोटड़ी के पास बना सनदी के किनारे बसा हुआ है। हिम्मत सिंह पट्टे में दिये गये गाँवों में बड़लियास सर्वाधिक आय वाला गाँव था। बड़लियास की रेख 4000 टका थी। यहाँ पर चारभुजानाथ का प्राचीन मन्दि रहै। जिनकी पूजा-पाठब्राह्मणों द्वारा की जाती है। ऐसे तो यहाँ पर सभी जाति-धर्म के लोग निवास करते हैं, परन्तु ब्राह्मणों व राजपूतों की संख्या ज्यादाहै। हिम्मत सिंह ने बड़लियास में जागीरी गढ़ बनाया था और सपरिवार यहाँ पर निवास करने लगे। यही पर रहते हुए शेष गाँवों की प्रबन्धन व्यवस्था देखते थे। बड़लियास के जागीरदार हिम्मतसिंह के वंशज ही रहे हैं इन के जागीरी गाँवों में बदला वन हीं किया गया था। हिम्मत सिंह के स्वर्गवास के बाद यहाँ पर उनके वंशज निम्नक्रम में जागीरदार रहे हैं-

(I) किशोरसिंह (II) सुरतान सिंह (III) शम्भूसिंह (IV) पहाड़ सिंह (V) चन्द्रसिंह (VI) सुजाणसिंह (VII) भवानी सिंह (VIII) सलामत सिंह (IX) चत्रसिंह (X) फतेसिंह- द्वितीय7

मेवाड़ महाराणा की ओर से यहाँ के ठिकानेदार के वंशजों को महाराज की उपाधि प्रधान की गई थी।[8] फतेहसिंह द्वितीय की मृत्यु के बाद जसवंत सिंह वमेघ सिंह का परिवार वहाँ पर निवासरत रहे हैं। हालांकि इनके परिवार के कई सदस्य भीलवाड़ा चले गये हैं।

- गंधेरी- गंधेरी वर्तमान में कोटड़ी पंचायत समिति के ककरोलिया घाटी ग्राम पंचायत में स्थित हैं। मांडलगढ़ से दूरी लगभग 22 किलोमीटर है। गंधरी की रेख 2000 टका थी।

www.ignited.in

- धामणघटी- धामण घटी मांडलगढ़ पंचायत समिति में स्थित है। यहाँ पर धाकड़ जाति सर्वाधिक संख्या में निवास करती है। यह गाँव खालसा से पट्टे में दिया गया।
- सीराठौ-सीराठौ का वर्तमान नाम सराणा है। सराणा की रेख 4000 टका थी।[9]
- पलासेण-मांडलगढ़ पंचायत समिति में यह गाँव फलासिया के नाम से जाना जाताहै।
- हलेड़ - हलेड़ वर्तमान में सुवाणा पंचायत समिति में स्थित है।
- नामभोली, राईसेण, बडलियावास

बड़लियावास के जागीरदार रहते हुए हिम्मत सिंह के वंशजों ने मेवाड़ महाराणा को सैनिक सेवा अर्पित की है। दोनों के मध्य हमेशा से ही प्रेमपूर्वक सम्बन्ध रहे हैं। महाराणा भी उन्हें मेवाड़ दरबार में उचित स्थान देते रहे हैं।

2. कुंवर उम्मेद सिंह को मांडलगढ़ में जागीर

मुगल बादशाह औरंगजेब की मृत्यु के बाद केन्द्रिय सत्ता कमजोर होने लगी। इससे प्रान्तों में भी विद्रोह होने लगे। राजस्थान में भी पड़ौसी राज्यों के साथ संघर्ष एवं यहाँ की रियासतों व ठिकानेदारों के मध्य आपसी विरोध होने लगे। मेवाड़ के महाराणाओं ने अपने राजवंश द्वारा स्थापित अन्य राज्यों को वापिस अपने राज्य में मिलाने की चेष्टा की। जब-जब महाराणा को मौका मिला उन्होंने शाहपुरा, बाँसवाड़ा, प्रतापगढ़ पर आक्रमण करके सीमा विस्तार का प्रयास किया। कई मतभेदों के होते हुए भी कौटुम्बिक तथा व्यक्तिगत सम्बन्धों के कारण शाहपुरा के महाराजाधिराज मेवाड़ महाराणा की सेवा में उपस्थित होते रहे हैं। महाराणा द्वारा उन्हें उपहार स्वरूप् मांडलगढ़ परगने में जागीर प्रदान की गई थी। जिससे आपसी सम्बन्ध मधुर बने रहे।

मेवाड़ व शाहपुरा के मध्य विवाद

शाहजादे आज्जम और मुआज्जम के मध्य हुए उत्तराधिकार संघर्ष में मुआज्जम की विजय हुई और वह बहादूरशाह के नाम से मुगल तख्त पर विराजमान हुआ। उस समय शाहपुरा के महाराज भारतसिंह शाही सेवा के लिए मुगल दरबार में उपस्थित हुए। बादशाह ने भारतसिंह को जहाजपुर का परगना देने का शाही फरमान दिया और एक अन्य फरमान जहाजपुर के जागीरदार के पास भी भेजा। उसमें लिखा की परगना खाली कर भारतसिंह को सौंप दिया जायें। परगना पर अधिकार करने के लिए बादशाह ने भारतसिंह को शाही सेना की सहायता का भी आश्वासन दिया। उस समय जहाजपुर मेवाड़ महाराणा अमरसिंह द्वितीय के अधिकार में था इस कारण शाहपुरा व मेवाड़ के मध्य संघर्ष की स्थिति बन गई।[10]

मांडलगढ़ परगने के जागीरदारों की महाराणा से अर्जी

मांडलगढ़ के सीमावर्ती गांव छापरेड़ व रासेड़ के जागीरदारों एवं शाहपुरा के शासकों के मध्य सीमारेखा एवं पशुचोरी की वजह से हमेशा विवाद होते रहते थे।[11] उस समय मवेशी चारागाह को लेकर दोनों के मध्य विवाद हो गया। शाहपुरा की सेना ने छापरेड़ व रासेड के ठिकानेदारों पर आक्रमण किया और वहाँ के सैनिकों को गिरफ्तार कर शाहपुरा में बन्दी बना लिया। बाद में दोनों के मध्य समझौता हुआ और शाहपुरा महाराज ने 28000 रूपये जुर्माना राशि लेकर उन्हें रिहा किया। इस कारण वहाँ के जागीरदार शाहपुरा महाराज को सबक सिखाने के लिए हमेशा तैयार रहते थे। जहाजपुर परगने का शाही फरमान भारतसिंह को मिलने से इन जागीरदारों को अवसर मिल गया। उन्होंने मेवाड़ महाराणा अमरसिंह द्वितीय को शाहपुरा पर आक्रमण कर अधिकार करने के लिए अर्जी भेजी।

उस अर्जी में पूर्व में उनके यहाँ शाहपुरा महाराज द्वारा किये गये आक्रमण व हर्जाना राशि तथा सीमाविवाद के बारे में लिखा।

मेवाड़ सेना द्वारा शाहपुरा का घेरा

महाराणा अमरसिंह द्वितीय सलुम्बर के कंवर केसरीसिंह सहित सेना लेकर शाहपुरा की ओर प्रस्थान किया। मेवाड़ फौज ने शाहपुरा पहुँचकर घेरा डाला। उस समय शाहपुरा के महाराजाधिराज भारतसिंह शाही सेवा के लिए दिल्ली में मुगल दरबार में थे। यहाँ का शासन प्रबन्ध का कार्य उनके ज्येष्ठपुत्र कुंवर उम्मेदसिंह कर रहे थे। कुं. उम्मेदसिंह उस समय 9 वर्ष के थे। उन्होंने सभी सरदारों से मंत्रणा करके मेवाड़ की फौज का सामना करने का निर्णय लिया। कुं. उम्मेदसिंह ने अपने ठिकानेदारों को शाहपुरा बुलाकर युद्ध की तैयारी के लिए सामग्री जुटाना आरम्भ कर दिया। कुं. उम्मेदसिंह की युद्ध तैयारी की सूचना महाराणा को मिलने पर उन्होंने अपने ही राजवंश का खून बहाना उचित नहीं समझा। कुं. केसरी सिंह ने महाराणा से अर्ज किया की युद्ध होने पर दोनों ही ओर के सैनिक वीरगति को प्राप्त होंगे। संधि वार्ता हेतु शाहपुरा के कुं. उम्मेदसिंह को महाराणा के सम्मुख उपस्थित होने के लिए आमंत्रित किया गया। कुं. उम्मेदसिंह ने अपने सरदारों से विचारविमर्श कर के महाराणा के पास जाने का निश्चय किया। अन्त में संधि वार्ता हेतु चमनचारण व सलुम्बर के कु. केसरी सिंह के साथ शाहपुरा

www.ignited.in

के बहारमेवाड़ सेना के पड़ाव में महाराणा के सम्मुख उपस्थित हुए। महाराणा उनकी वीरता से बहुत प्रभावित हुए क्योंकि उन्होंने अल्पायु में भी इतनी वीरतापूर्वक कार्य किया और मेवाड़ सेना के आक्रमण का सामना करने के लिए युद्ध तैयारी आरम्भ कर दी। महाराणा ने शाहपुरा से फौज खर्च लेकर वापिस मेवाड़ की ओर प्रस्थान करने की बात रखी। परन्तु कुं. उम्मेदसिंह ने कहा की महाराणा के तोफौज खर्च में लाखों रूपये खर्च हुए हैं इसमें शाहपुरा का कोई दोष नहीं है। अन्त में सलुम्बर के कुं. केसरीसिंह की मध्यस्ता से 22000 रूपये फौज खर्च के लेना तय हुआ और कुं. उम्मेदसिंह को मेवाड़ दरबार में उपस्थित होने के लिए आमंत्रित किया गया।महाराणा ने कहा कि यदि वह मेवाड़ सेवा में रहते हैं तो उन्हें जागीर प्रदान की जायेगी। कुंउम्मेदसिंह अपनी रियासत का प्रबन्ध कर के दो दिन पश्चात् उदयपुर की ओर रवाना हुए और उदयपुर के निकट गुरला नामक स्थान पर महाराणा से मुलाकात की।[12] महाराणा ने उन्हें खर्च के रूप में पांच सौ रूपये 2 खजाने से देने व उदयपुर दरबार में उपस्थित रहने तक उनकी सेवाचाकरी के करने का आदेशदिया।

कुं. उम्मेदसिंह को पारोली की जागीर

मेवाड़ महाराणा के शाहपुरा पर आक्रमण करने व फौज खर्च लेने की सूचना दिल्ली में शाही सेवा में उपस्थित महाराजाधिराज भारतसिंह को मिली तो उन्होंने बादशाह से इस घटना का जिक्र किया। बादशाह ने उनकी अर्जी स्वीकार कर शाही फौज को शाहपुरा की रक्षार्थ मेवाड़ पर आक्रमण करने का फरमान जारी कर दिया। शाहीफौज के मेवाड़ की ओर प्रस्थान की सूचना महाराणा को मिलने पर उन्होंने शाहपुरा के कुं. उम्मेदसिंह व सलुम्बर के केसरीसिंह से इस विषय में विचार-विमर्श किया। महाराणा ने कुं. उम्मेदसिंह से कहा की मैंने तो आपको उपहार स्वरूप जागीर देने के लिए उदयपुर बुलाया हैं। आप के साथ कोई जबर्दस्ती नहीं की है। इस पर उन्होंने कहा की किसी चालबाज ने गलत सूचना दिल्ली भेजी हैं। मैं इस सम्पूर्ण घटनाक्रम की सही सूचना दिल्ली महाराजाधिराज भारतसिंह के पास भेजता हूँ। यदि फिर भी शाही आक्रमण मेवाड़ पर होता है तो हम सब मिलकर इस का सामना करेंगे। कुं. उम्मेदसिंह की वीरता से महाराणा अत्यधिक प्रभावित हुए। उन्होंने उपहार स्वरूप मांडलगढ़ परगने के पारोली क्षेत्र की जागीरी प्रदान की।[13] पारोली की जागीरी देने से मेवाड़ व शाहपुरा के मध्य मधुर सम्बन्ध कायम हो गये।

उस समय पारोली जगमालो तराणावतों के जागीर में थी। जब कुं. उम्मेद सिंह पारोली का पट्टा लेकर वहाँ पहुँचे तो उन पूर्व जागीर दारों ने पारोली देने से इंकार कर दिया। इस पर दोनों के मध्य संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो गई।[14] महाराणा के हस्तक्षेप से ही कुं. उम्मेद सिंह पारोली पर अधिकार कर सकें। उन्होंने पारोली का शासन प्रबन्ध सम्भालने के लिए सौभागसिंह राणावत को नियुक्त किया। शोभागसिंह ने अच्छा शासन स्थापित करके राजस्व प्राप्ति में वृद्धि की। परन्तु उन्हें फौज खर्च हेतु शाहपुरा से मात्र 21 रूपये प्रतिदिन के हिसाब से मिलते थे। इतनी कम राशि से उनके लिए फौज रखना मुश्किल हो रहा था। उन्होंने अर्ज करके गिरडिया गाँव का पट्टा भी फौज खर्च के लिए कुं. उम्मेदसिंह से प्राप्त किया।[15] पूर्व में यह गाँव उनके पास ही था। शौभागसिंह को अतिरिक्त आय प्राप्त होने पर फौज रखने व सुरक्षा व्यवस्था करने में आसानी हुई। जिसके परिणामस्वरूप पारोली क्षेत्र में शान्ति व्यवस्था कायम हुई। पारोली में हिन्दु व मुस्लिम दोनों ही सम्प्रदाय के लोग निवास करते हैं। यहाँ के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि व पशुपालन रहा है। यहाँ लोहा व अभ्रक खनिज प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। लोहे के विभिन्न औजार जैसे कुल्हाडी, हँसिया, भाले आदि बड़े पैमाने पर बनाये जाते हैं। यहाँ पर मीराबाई का प्रसिद्ध मन्दिर स्थित है जो इस क्षेत्र के लोगों की आस्था का प्रमुख केन्द्र हैं।

3. भारतसिंह एवं मांडलगढ़ में जागीर

मेवाड़ महाराणा संग्रामसिंह द्वितीय के समय शाहपुरा के साथ अच्छे सम्बन्ध रहे थे। शाहपुरा के महाराजा भारतसिंह ने भी शाही सेवा में रहते मेवाड़ पर शाही सेना के आक्रमण को रोका था। इस घटना से प्रभावित होकर महाराणा ने बिहारी दासपंचोली व सांवलदास को महाराजा भारतसिंह को उदयपुर आने का निमन्त्रण देकर शाहपुरा भेजा। भारतसिंह के उदयपुर पहुँचने पर महाराणा स्वयं उनकी अगवानी करने गये थे। दूसरे दिन अपनी पूरी साज-सज्जा के साथ भारत सिंह मेवाड़ दरबार में उपस्थित हुए थे। महाराणा ने उनका स्वागत सत्कार किया और उन्हें बदनोर का पट्टाई नाम स्वरूप दिया था। उस समय बदनोर जयसिंह राठौड़ की जागीर में था अतः जयसिंह ने इस का विरोध किया। विवाद बढ़ता देख महाराणा ने बदनोर का पट्टा निरस्त कर दिया। इसके स्थान पर मांडलगढ़ परगने के 17 गाँव जागीर में प्रदान किये। जागीर में गाँव- बरूदणी, झोझवा, खटवाडा, बीगोद, राणीखेड़ा, सराणा खुर्द, सराणाबड़ा, बील्या, गोवठा (गोवटा), रामथली, टलवाबडा, टलवा खुर्द, देवगढ़, श्यामगढ़ की खेड़ी, लोढयाणा, धामणिया, धंधोला सम्मिलित थे।इन गाँवों की कुल उपज 26500 रूपये थी।[16]

(I) **बीगोद –** बीगोद त्रिवेणी संगम (बनास-बेड़च मेनाली) के पास बसा हुआ है। यहाँ पर मुस्लिम जनसंख्या सर्वाधिक है। बीगोद का लोहा व्यवसाय पूरे मेवाड़ में प्रसिद्ध है।महाराणा द्वारा बीगोद में लोहा उत्खनन

www.ignited.in

का कार्य करवाया जाता था। यहाँ का लोहा अपनी शुद्धता के लिए प्रसिद्ध था।[17]

(II) **गोवटा -** गोवटा में माताजी का प्रसिद्ध मन्दिर है, जहाँ पर लकवाग्रस्त व्यक्ति एवं अन्य श्रद्धालु दर्शनार्थ आते हैं। यहाँ परगोवटा बांध मांडलगढ़ क्षेत्र का प्रमुख रमणीय स्थल है। इस क्षेत्र में अफीम की खेती बहुतायत में होती है।

(III) **बरूदंणी -** बरूदणी कोटड़ी पंचायत समिति में बेडच नदी के किनारे पर स्थित है। बरूदणी में दीपावली के दूसरे दिन गोवर्धन पूजा की रात को भैरवघास की पूरे गाँव में सवारी निकाली जाती है। भैरवघास को बैलों द्वारा खिंचा जाता है। अन्त में समस्त ग्रामवासी भैरवघास की पूजा अर्चना करते हैं। भारतसिंह को जागीरी में मिले गाँवों में सर्वाधिक राजस्व यहाँ से ही प्राप्त होता था। बरूदंणी की कुलउपज 5000 रूपये थी।

मेवाड़ महाराणा संग्रामसिंह द्वितीय ने भारत सिंह के विश्वसनीय सरदारों को भी मांडलगढ़ परगने में गांव जागीर दिये थे।

(I) **पृथ्वी सिंह राठौड़ -** पृथ्वीसिंह राठौड़ को मांडलगढ़ में मुवोखेड़ो, सरेरी खेड़ी, श्रीनगर, सराणों का खेड़ा एवं मुक्कनगढ़ का पट्टा दिया गया। इन गांवों की उपज 4500/-रुपये थी।

(II) **बख्तसिंह नाथावत -** मांडलगढ़ में बख्तसिंह नाथावत को पांच गांवों का पट्टा दिया गया था। ये गांव-मानपुरा, चैनपुरा, दौलतपुरा, नवलपुा एवं गजरणीयां थे। इन गांवों की उपज लगभग 10500 रुपये थी।

(III) **जोरावर सिंह सीसोदिया -** जोरावर सिंह कोमांडलगढ़ में आठ गांवों का पट्टा ईनाम स्वरूप प्रदान किया गया। ये गांव- खोखुन्दा, खाखुन्दा का खेड़ा, रवला का खेड़ा, भोजगढ़, महलों, मटेला, भीवपुर एवं बांकरा थे।

(IV) **दियालदास राठौड़ -** दियालदास राठौड़ को अमरपुरा, राजपुरा एवं उम्मेदपुरा गाँवों की जागीरी प्रदान की गई थी।

(V) **हरनाथ सिंह सीसोदिया -** मांडलगढ़ में हरनाथ सिंह सीसोदिया कोकेवल एक गाँव-मल्लीनाथपुरा का पट्टा दिया गया था।

(6) **रूपराम सीसोदिया -** रूपराम सीसोदिया को देवपुरा का पट्टा दिया गया।

इस प्रकार मेवाड़ महाराणा ने शाहपुरा के महाराणा भारतसिंह व उनके सरदारों को मांडलगढ़ परगने में लगभग एक लाख रूपये उपज के गाँव पट्टे में दिये गये थे। महाराणा ने इन समस्त गाँवों की जागीरी भारतसिंह कोसौंपने के लिए बिहारी दासपंचोली को मांडलगढ़ भेजा। ताकि वहाँ पर कोई विवाद नहीं हो।

संदर्भ सूची

1. शाहपुरा राज्य की हस्तलिखित ख्यात, भाग-1, पृ. सं. 33, (श्री रघुवीर पुस्तकालय, सीतामऊ)

2. बनारसी प्रसाद सक्सेना, हिस्ट्री ऑफ शाहजहाँ, भारतीय कला प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण 2013 ई. पृ. सं. 328

3. शाहपुरा राज्य की हस्तलिखित ख्यात, भाग-1, (श्री रघुवीर पुस्तकालय, सीतामऊ) पृ. सं. 34

4. वही, पृ. सं. 41-42

5. (अ) वही, पृ. सं. 43

(ब) जगदीश सिंह गहलोत, राजपूताने का इतिहास, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, प्रथम संस्करण 1949 ई., पृ. सं. 557

6. हुकम सिंह भाटी, महाराणा राज सिंह-पट्टाबही-पट्टेदारांरी विगत, हिमांशु पब्लिकेशन, उदयपुर, प्रथम संस्करण, 1994 ई. पृ. सं. 69

7. शाहपुराराज्य की हस्तलिखित ख्यात, भाग-1, (श्री रघुवीर पुस्तकालय, सीतामऊ) पृ सं. 43

8. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, उदयपुर राज्य का इतिहास, भाग-2, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, प्रथमावर्ती 1928 ई. पृ. सं. 976

9. हुकम सिंह भाटी, महाराणा राज सिंह-पट्टाबही-पट्टेदारांरी विगत, हिमांशु पब्लिकेशन, उदयपुर, प्रथम संस्करण, 1994 ई. पृ. सं. 69

10. शाहपुरा राज्य की हस्तलिखित ख्यात, भाग-1, (श्री रघुवीर पुस्तकालय, सीतामऊ) पृ. सं. 79

11. वही, पृ. सं. 80

12. वही, पु. सं. 81-82

www.ignited.in

13. वही, पृ. सं. 84

14. वही, पृ. सं. 94

15. वही, पृ. सं. 203

16. वही, पृ. सं. 11

17. गौरी शंकर हीराचन्द्र ओझा, उदयपुर राज्य का इतिहास, भाग-1, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, प्रथमावर्ती 1928 ई. पृ. सं. 11

Corresponding Author

Hari Lal Balai*

Research Scholar, Mohanlal Sukhadiya University , Udaipur

harilal0796@gmail.com